|| श्री साईबाबा सकलमनोरथसिद्ध यंत्र ||

साई धून

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥
हरे साई हरे साई साई साई हरे हरे ।
हरे बाबा हरे बाबा बाबा बाबा हरे हरे ॥
हरे दत्त हरे दत्त दत्त दत्त हरे हरे ।
हरे साई हरे साई साई साई हरे हरे ॥
साई राम साई राम साई राम साई राम ।
साई श्याम साई श्याम साई श्याम साई श्याम ॥

शिरडी के साईबाबा का सुख, शांति, समृद्धी, तंदुरस्ती और
सर्व मनोकामना पूर्ण करनेवाला चमत्कारिक व्रत

शिरडी के साईबाबा का व्रत

(हिंदी)

नौ गुरुवार का शीघ्रफलदायी व्रत

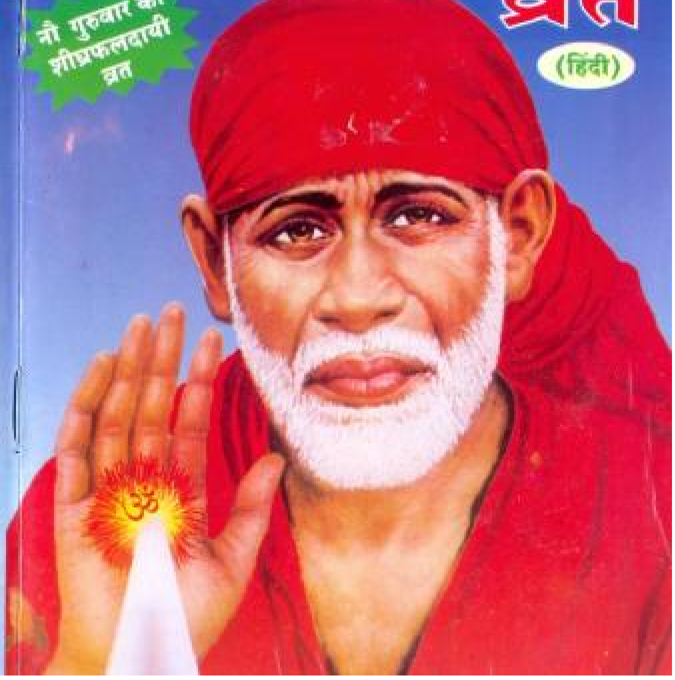

॥ ॐ श्रीसाईनाथाय नम: ॥

हिन्दी

शिरडी के श्रीसाईबाबा का सर्व मनोकामना पूर्ण करने वाला,
आयुरारोग्य, सुख-शांती-समृद्धी देनेवाला, शीघ्रफलदायी व्रत

नौ गुरुवार का शिरडी के साईबाबा का व्रत

श्रद्धा

सबुरी

साई तू देव है, निराधार का आधार है।
दीनो का तारनहार है, सबका पालनहार है।

रचयिता : जितेंद्रनाथ ठाकुर
अनुवादक : संदीप गर्ग

मूल्य ८ रुपये

प्रकाशक : त्रिवेणी प्रकाशन

माधवबाग, सी.पी. टैंक रोड, मुंबई ४०० ००४.

॥ ॐ साईनाथाय नमः ॥

''नौ गुरूवार का शिरडी के साईबाबा का व्रत''

प्रस्तावना

अपने पवित्र वास्तविकता के लिए तीर्थक्षेत्र शिरडी के नाम से जाने जानेवाले श्रीसाईबाबा भारतीय सनातन की परंपरा मे एक महान सिद्ध पुरुष थे। श्री साईबाबा अवलिया ज्ञानी संत थे। उन्होंने लोगो को प्रपंच और परमार्थ इसका अर्थ समझाकर जीवन मे सुख और आनंद कैसे प्राप्त करे और लोगो को दे यह सिखाया था।

साईबाबा हमेशा अपने भक्तों से कहते थे कि, ''ईश्वर भक्तिभाव का भुखा है। वह सर्वत्र अंतर्बाह्य व्यापक है। वे प्रत्येक वस्तु मात्र मे है। उन्हे शुद्ध अंतःकरण से भजोगे तो ईश्वर भक्ति से आपके होंगे। एक ईश्वर ही सबका मालिक है। उनका सबके ऊपर ध्यान रहता है। वही यह जीवन तारनेवाला और संभालने वाला है। उनके ऊपर **श्रद्धा** और **सबुरी** रखोगे तो, उनकी कृपा की जानकारी आपको होगी।''

श्री साईबाबा का जीवन चरित्र यह उनके कार्य का, उनके अनुभव संपन्न मार्गदर्शक विचारों का अमुल्य संग्रह है। इनकी भक्ति से अंतःकरण शुद्ध होता है, चित्त (मन) स्थिर और निर्मल बनता है। जीवन मे समाधान और आनंद का निर्माण होता है। साईबाबा भक्तो की भक्ति और प्यार के भुखे है। वे अल्प सेवा से ही संतुष्ट हो जाते है। वे अपने भक्तो के सब कष्ट हर लेते है। उनके दुःखो और संकटो मे उनकी रक्षा करते है और मनोरथ पूर्ण करके अपने भक्तो का कल्याण करते है। आज तक असंख्य भाविको ने साईबाबा की शरण मे जाकर उनका कृपाप्रसाद प्राप्त किया है। वही कृपा रूपी प्रसाद आपको मिले इसलिए **'नौ गुरूवार का शिरडी के साईबाबा का व्रत'** यह पुस्तक लिखी है। यह व्रत से बाबा की कृपा आप पर होकर आपकी सर्व मनोकामना पूर्ण हो यही सदइच्छा है। समर्थ सद्‌गुरू श्री साईनाथ महाराज की जय!

- अनुवादक : **संदीप गर्ग**

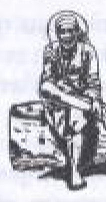

व्रतमाहात्म्य

'नौ गुरूवार का शिरडी के साईबाबा का व्रत' यह श्रीसाईबाबा के लिए किया जाने वाला शीघ्र फलदायी श्रेष्ठ व्रत है। मनुष्य को अपने जीवन मे अनेक प्रकार के संकटो, कष्टो, अडचनो, दुःखो और परेशानीयों का सामना करना पड़ता है। इससे उसकी मानसिक, शारीरिक अस्वस्थता, चिंता, क्लेश, द्वेश आदि बढ़ जाते है और उसकी मनःशांती खत्म हो जाती है। यह व्रत करने से साईबाबा प्रसन्न होते है और सब कष्टो से निवारण होता है। यश, किर्ती, सुख, शांती, समाधान, ऐश्वर्य और आयुरारोग्य का लाभ मिलता है। कड़वे अनुभवो मे धैर्य प्राप्त होता है और श्रद्धा मे वृद्धी होती है। साईभक्ती का यही चमत्कार है।

शत्रु भय से मुक्ति, विद्या अभ्यास मे प्रगती, नौकरी मिलना, शादी-ब्याह होना, व्यापार मे वृद्धी मिलना, संकटो का निवारण हो, सर्व प्रकार की समृद्धी हो, प्रगती हो, उत्तम संतान लाभ हो ऐसे अनेक इष्टकार्य सिद्धी के लिए यह व्रत किया जाता है। संकट के समय साईबाबा को मन से याद करने या व्रत का संकल्प करने से संकट का निवारण होकर सुख प्राप्त होता है, इसके अनेक उदाहरण है। मात्र संकल्प करने के साथ व्रत का आचरण भी करना चाहिए। यह व्रत करने से अनेकों को इसके चमत्कार का अनुभव हुआ है। यह व्रताचरण से आपका कल्याण हो यह निष्ठा मन मे रखनी चाहिए।

व्रत के बारे मे कुछ सुचनाएँ

१) शिरडी के साईबाबा भक्ति के भुखे है। उनकी समाधी स्थान पर आज भी उनकी आत्मज्योत निरंतन जागृत है। वे अपने भक्तों को आज भी दर्शन देते है और उनका मार्गदर्शन करते है। इसलिए व्रतकर्ता को साईबाबा साक्षात भगवान है यह दृढ़विश्वास रखकर ही व्रत करना चाहिए।

२) यह व्रत दिन शुद्धी देखकर किसी भी गुरूवार से शुरु कर सकते है।

३) यह व्रत क्रम से नौ गुरूवार तक करना चाहिए।

४) यह व्रत मे जाती और धर्म का भेद-भाव नही है। यह व्रत कोई भी स्त्री-पुरुष और बच्चे कर सकते है।

५) दुसरो के कार्य मे अडचन का निर्माण हो इस भावना से यह व्रत नही करे। संकल्प शुद्ध और कल्याणकारी होना चाहिए।

६) यह व्रत फलाहार (जैसे - दूध, फल, चाय - कॉफी आदि) लेकर किया जा सकता है अथवा एक समय भोजन करके किया जा सकता है। बिलकुल भूखे रहकर उपवास नही किया जाये।

७) अन्य व्रतो की तरह इस व्रत मे भी व्रत के दिन परनिंदा, झूठ, अपशब्द प्रयोग, झगड़ा, हिंसा, अधर्म आदि नही करना चाहिए। ब्रह्मचर्य पालन करे और व्यसन नही करे।

८) जिस कार्य के लिए व्रत किया हो वह 'व्रत संकल्प' पहले गुरूवार को करे।

९) नौ गुरूवार व्रत होने के बाद दशवे गुरूवार को व्रत का उद्यापन करें।

१०) व्रत के दिन स्त्रियो को मासिक की समस्या अथवा किसी कारण से व्रत नही हो पा रहा है तो वह गुरूवार को व्रत नही करे और उस गुरूवार को नौ गुरूवार की गिनती मे नही ले। इस गुरूवार के बदले अगले गुरूवार को व्रत करके नौ गुरूवार पूर्ण करे तथा इसके बाद वाले गुरूवार को उद्यापन करे।

११) यात्रा प्रसंग मे यह उपवास छोडे नही। यात्रा मे बाबा की पूजा, आरती, नैवेद्य - प्रसाद आदि संभव नही है, तब साईबाबा की मन मे पूजा करे। यह गुरूवार की गिनती नौ गुरूवार मे नही करे और अगला एक गुरूवार अधिक करे।

१२) यह व्रत शीघ्र फलदायी है। जो इष्टकार्य (मनोकामना) के लिए व्रत रखा है और इष्टकार्य नौ गुरूवार पूरा होने से पहले पूरा हो जाता है, तो भी व्रत नौ गुरूवार तक पूरा करे और दशवे गुरूवार को उद्यापन करे। इच्छित कार्य पूरा होने पर व्रत बीच मे अधुरा नही छोड़े।

१३) व्रत के दिन एकादशी, महाशिवरात्री जैसे पूर्ण दिन उपवास आ जाये तो उस गुरूवार को उपवास करे लेकिन नौ गुरूवार मे इसकी गिनती नही करे। एक गुरूवार अधिक करने के बाद इस व्रत को उद्यापन करे।

१४) **विशेष सूचना :** किसी कारण से जैसे - सुतक, सोहर, घर मे आया अचानक संकट, खुद का बिमार पड़ना, यात्रा, व्रतकर्ता स्त्री-पुरुष के बच्चो का बिमार पड़ना आदि अनेक कारणो से व्रत खंडीत हो जाता है। उस समय वह गुरूवार की गिनती नही करे और उपवास नही करे। उस समय जितने गुरूवार आपने पहले किये हो वह बेकार नही जायेंगे। परिस्थिति अनुकूल होते ही आगे के गुरूवार पूरा करके उद्यापन करे।

श्रीसाईबाबा व्रत से होनेवाले अद्‌भुत चमत्कार

'नौ गुरूवार का शिरडी के साईबाबा का व्रत' यह अत्यंत प्रभावी, आचरण मे सुलभ, शीघ्र फलदायी और मंगलप्रद व्रत है। यह व्रत के पुण्य प्रभाव से और साईबाबा की पूर्ण कृपा से अनेक भक्तों की इष्ट मनोरथ पूर्ण हुए है और अनेकों का कल्याण हुआ है। यहाँ कुछ भक्तो के अनुभव दिये गये है।

१) **दसवी बोर्ड परिक्षा मे अच्छे प्रतिशत प्राप्तः** दसवी मे पढ़ने वाली एक लड़की का पढ़ाई मे ध्यान नही था। उसे पढ़ाई मे जरा भी रूची नही थी। घर मे माँ-बाप, स्कूल मे शिक्षक उसे पढ़ाई मे अभ्यास के लिए लगातार बोलते रहते थे। उसकी पढ़ाई उसके अभिभावक के लिए चिंता का विषय बन गयी थी। नववी तक तो पढ़ाई जैसे-तैसे हो गयी मगर दसवी (बोर्ड) में कैसे और क्या होगा? आखिर मे वही हुआ कि वह लड़की दसवी की परिक्षा मे दो विषय मे फेल हो गयी। आखिर मे किसी ने उसे 'नौ गुरूवार

का 'शिरडी के साईबाबा का व्रत' करने के लिए कहा। व्रत शुरू करते ही हुआ आश्चर्य! श्रीसाईबाबा की कृपा से लड़की की स्मरणशक्ती बढ़ गयी और किया हुआ अभ्यास उसे ध्यान रहने लगा। इससे उसका आत्मविश्वास बढ़ा और उस लड़की ने भरपूर अभ्यास करके दसवी बोर्ड की सारी परिक्षा फिर से दी। उस परिक्षा मे उसे ८० प्रतिशत अंक मिले। यह उसके अभिभावक और शिक्षक के लिए किसी चमत्कार से कम नही था। बोलो साईबाबा की जय!

२) **नौकरी मिली :** वाणिज्यशास्त्र (कॉमर्स) का एक उच्च शिक्षा डिगरी वाले तरूण को काफी प्रयत्न करने पर भी उसको उसे मन ईच्छा अनुसार नौकरी नही मिल रही थी। इस कारण से वह काफी निराश हो गया था। उसके घर वालो को उसके स्वास्थ्य और **नौकरी** की चिंता होने लगी। तब किसी सद्गृहस्थ ने उन्हे साईबाबा की शरण मे जाकर 'नौ गुरूवार का शिरडी के साईबाबा का व्रत' करने के लिए कहा। उसके माँ-बाप ने मनःपूर्वक और पूर्ण श्रद्धा से व्रत करके उद्यापन किया। शिघ्र ही साईबाबा की परमकृपा से उस तरूण को एक अच्छी बडी संस्था मे उत्तम तनखा की नौकरी मिली। बोलो साईबाबा की जय!

३) **संतान प्राप्ति हुई :** एक दंपती को विवाह होकर कई वर्षो के बाद भी संतान नही हुई। उन्होने बड़े-बड़े डॉक्टरो को दिखाया और अनेक इलाज कराये लेकिन कोई भी उपयोग काम नही आया। वैद्यकीय उपचार से थककर उन्होने तंत्र-मंत्र-टोटके और धार्मिक उपाय भी किये, लेकिन सब व्यर्थ। लोगो, घर और परिवार वालो द्वारा टोकने, निसंतान आदि कहने से उनका दृष्टिकोण बदल गया और वे जीवन से निराश हो गये थे। उनके दाम्पत्य जीवन का आनंद खत्म हो गया था। यह दंपती मे पत्नी एक सरकारी कार्यालय मे काम करती थी। एक दिन उसके सह कर्मचारी ने उसे 'नौ गुरूवार का शिरडी के साईबाबा का व्रत' करने की सलाह दी और उसे साईबाबा व्रत की पुस्तक

लाकर दी। उस स्त्री ने मनःपूर्वक पुस्तक पढ़ी और भक्तो के अनुभव पढ़कर और व्रताचरण से मनोकामना पूर्ण होगी ऐसा उसको विश्वास हुआ। इसके बाद उसने बाबा का पूर्ण श्रद्धा से व्रत और उद्यापन किया। साईबाबा शिघ्र ही उस पर प्रसन्न हुए। शिघ्र ही उस स्त्री की गोद भर गयी। प्रसूतिकाल पूर्ण होने पर उसने एक सुन्दर कन्या को जन्म दिया। इस प्रकार साईबाबा की **कृपा से उस दंपती के मनोरथ पूर्ण हुए। बोलो साईबाबा की जय!**

४) **प्राण संकट से छुटकारा :** एक गृहस्थ मे पत्नी को हमेशा कब्जियात की शिकायत रहती थी। इसके उपचार के लिए वह आयुर्वेद का चूर्ण पानी के साथ लेती थी। एक बार चूर्ण लेते समय पानी का भरा काँच का ग्लास चटक गया और काँच का एक टुकड़ा पानी के साथ पेट मे चला गया। इससे वह घबड़ा गयी। थोडे ही समय बाद उस स्त्री को शौचालय की जगह से रक्तस्राव होने लगा। खून रूकने का नाम ही नही ले रहा था। यह देखकर गृहस्थ घबड़ा गये। पत्नी की अवस्था खराब होने लगी। क्या करे? कुछ समझ मे नही आ रहा था और इतने मे वह बेहोश हो गयी। मध्यरात्री का समय था। रात के एक बजे थे। इस समय मदत के लिए किसे बुलाये? उस सद्गृहस्थ ने 'नौ गुरूवार का शिरडी के साईबाबा का व्रत' के बारे मे सुना था। उस समय उसे साईबाबा की याद आयी। उसने घर के मंदीर मे साईबाबा की तस्वीर के आगे दिया जलाया और साईबाबा से प्रार्थना करी कि, है साईबाबा मेरे ऊपर कृपा करो। मेरी पत्नी के पेट में काँच का टुकड़ा चले जाने से उसे रक्तस्राव हो रहा है, उसे रोक दो। उसके प्राण संकट से बचालो। यदि उसका खून का आना बंद हो गया और उसके प्राण बच जायेगें तो मैं आपका 'नौ गुरूवार का व्रत विधिपूर्वक और श्रद्धा से करूंगा।' एकदम से आश्चर्य! थोडी देर मे उसकी पत्नी के पेट मे गया काँच का टुकड़ा शौचालय के साथ बाहर आ गया और उसे खून आना बंद हो गया। रात को ही वह अपनी पत्नी को लेकर अस्पताल गया और डॉक्टर ने टेस्ट करके बताया

कि पेट मे किसी प्रकार की कोई चोट नही पहुँची है। यह सुनकर दोनो पती-पत्नी को चैन पडा और उन्होंने साईबाबा को धन्यवाद दिया। इसके बाद संकल्प के अनुसार दोनो ने श्रद्धापूर्वक साईबाबा का नौ गुरूवार का व्रत और उद्यापन किया और व्रत की महिमा बढ़ाने के लिए साईव्रत की पुस्तके मित्रो-रिस्तेदारो को भेट दी। बोलो साईबाबा की जय!

५) **पेट दर्द रूक गया :** एक औरत के पेट मे सतत दर्द रहता था। बहुत ईलाज के बाद मे भी उसका पेट दर्द ठिक नही हुआ। आखिर डॉक्टरो ने टेस्ट करने पर बताया कि उसकी आँत मे कुछ विकार है जिसके कारण पेट मे दर्द रहता है। उसके लिए पेट का ऑपरेशन करना पडेगा। उस औरत ने पेट का ऑपरेशन कराया मगर कुछ दिन बाद फिर से पेट मे दर्द होने लगा। डॉक्टर को बताने पर डॉक्टर ने कहा कि फिर से एक ऑपरेशन करना पडेगा। यह सुनकर वह औरत घब्रड़ा गयी और फिर से ऑपरेशन के लिए रूपया पैसा कहाँ से लाये? तब उसकी एक सहेली ने सब जानकर उससे कहाँ कि 'शिरडी के साईबाबा का नौ गुरूवार का व्रत' कर, बाबा की कृपा से तुम्हारे दुःख से तुम्हे निवारण मिलेगा। उस औरत ने श्रीसाईबाबा का व्रत यथाविधि संकल्प के साथ श्रद्धा से किया। व्रत के समय अगरबत्ती से जो भस्म गिरती उसे साईबाबा की उदी मानकर वह श्रद्धा से अपने पेट पर लेपन करती। और हुआ चमत्कार! उसका दर्द धीरे-धीरे घटने लगा और व्रत पूर्ण हाने तक उसका पेट दर्द पूरी तरह से मिट गया। इससे उसे अतिशय आनंद हुआ। उसने पूरी श्रद्धा से व्रत का उद्यापन किया और साई व्रत की महिमा बढ़ाने के लिए साई व्रत की पुस्तके भेट दी। बोलो साईबाबा की जय!

६) **विवाह हो गया :** एक पढ़ा-लिखा सुन्दर युवक था। वह एक वकील के यहाँ नौकरी करता था। अच्छा कमाने के भी कई वर्ष बीत जाने पर भी कही उसका विवाह निश्चित नही हो रहा था। वह युवक साईबाबा को मानता था और कभी कभी मंदीर भी जाता था। लेकिन कभी भी उसने विधि और

संकल्प पूर्वक साईबाबा का व्रत नही किया। उसके एक मित्र थे जो बड़े साईभक्त थे। उन्होने उस युवक को साईबाबा के व्रत-संकल्प और उद्यापन के बारे मे बताया। उस युवक ने नौ गुरूवार का साईबाबा का व्रत करने का संकल्प किया और कुछ ही दिन बाद उसका विवाह एक सुंदर, सुशील और अच्छे परिवार की युवती से हो गया। इस प्रकार साईबाबा की कृपा से उस युवक को एक अच्छी और सुशील पत्नी मिली। बोलो साईबाबा की जय!

इस प्रकार अनेक ऐसे उदाहरण है जिससे साईबाबा की कृपा से नौ गुरूवार व्रत करने से लोगो को चमत्कारो का अनुभव हुआ है।

श्रीसाईबाबा की पूजा

पूजा की सामग्री : बैठने के लिए आसन, दिपक, धूप, अगरबत्ती, कपूर, खुशबू वाले फूल, इत्र, मिठाई, हल्दी, कुमकुम, सुपारी, लोबान, डंठल वाले दो पान के पत्ते, चौकी, रोली, पीला कपड़ा (सवा गज), बाबा की तस्वीर या मुर्ती, दूब, गुड, नारीयल आदि।

पूजा की पूर्व तैयारी

१) पूजा का स्थान स्वच्छ करके रखे।
२) जहाँ चौकी रखनी हो वह स्थान पर पहले स्वस्तिक (卐) बनाये और उस पर चौकी रखे।
३) चौकी पर कोरा पीला कपडा बिछाये।
४) इसके बाद श्रीसाईबाबा की तस्वीर रखे। तस्वीर मे साईबाबा बैठे हो ऐसी छबी रखे। तस्वीर गिरे नही इसका ध्यान रखे।
५) चौकी पर दाहिने हाथ की तरफ थोडा कुमकुम रखकर सुपारी को पान के पत्ते पर रखे और एक रूपया (सिक्का) रखे। यह गणेश पूजन के लिए जरूरी है। बाये हाथ की तरफ घंटा/घंटी रखे।
६) चौकी पर साईबाबा की तस्वीर के आगे अगरबत्ती, दिपक, पान-सुपारी, प्रसाद का नैवेद्य आदि के लिए जरूरी जगह होनी चाहिए।

७) पूजा का साहित्य अपने दाहिनी तरफ रखे।
८) दिपक जलाकर उसे चौकी के बाई तरफ रखे।
९) खुद के बैठने के लिए आसन रखे।

पूजा प्रारंभ : शुद्ध वस्त्र पहनकर और एक उपवस्त्र कंधे पर रखे। खुद को गंध लगाये और घर की नित्यपूजा के बाद साईबाबा व्रत की पूजन करे। पूजन पर बैठने से पहले सर्वप्रथम इष्टदेवता को हल्दी-कुमकुम लगाये और भगवान के आगे दो पान के पत्ते, उस पर एक सुपारी और एक रुपये रखे।

व्रत संकल्प और व्रतोपासना :

१) कोई भी काम्यव्रत संकल्प के बिना नही करा जाता ऐसा माना जाता है। 'नौ गुरूवार का शिरडी के साईबाबा का व्रत' यह व्रत मे संकल्प पहले गुरूवार को ही एक बार करना चाहिए।
२) इस दिन सुबह स्नान के बाद शुद्ध वस्त्र पहनकर कंधे पर एक उपवस्त्र रखे और माथे पर तिलक या बाबा की उदी लगाये।
३) श्री गणपती, कुलदेवता, ग्रामदेवता, इष्टदेवता और श्री गुरुदेव का स्मरण करके घर के बडे और माँ-बाप को नमस्कार करे।
४) इसके बाद घर मे भगवान की नित्यपूजा करे।
५) पूजन के बाद भगवान के सामने खड़े होकर सभी देवों को नमस्कार करे। अब दाहिने हाथ मे जल ले और श्री गणपती और श्री साईबाबा का स्मरण करके आगे लिखा संकल्प बोले -

हे गणेशजी! हे सद्गुरू साईनाथ जी! आप भाविकों के रक्षणकर्ता है, दीनो के तारक और अनाथो के नाथ है। आपकी शरण मे आये की आप कभी उपेक्षा नही करते है। इसलिए ..... (अपना नाम) .... आज विक्रम संवत .... तारीख .... मास (हिन्दी महीना) .... पक्ष (कृष्ण/शुक्ल) .... तिथी के गुरूवार से .... (यहाँ अपनी मनोकामना कहे) यह कार्य पूर्ण होने के लिए 'नौ गुरूवार का शिरडी के साईबाबा का व्रत' का संकल्प कर रहा हूँ।

यह व्रत का नियमानुसार आचरण करूँगा और व्रत पूरा होने पर दसवे गुरूवार को यथाविधी उद्यापन करके एक बच्चे और पाँच गरीबों को भोजन कराऊँगा। आप व्रत से संतुष्ट होकर मेरी मनोकामना पूर्ण करना ऐसे मैं आपसे विनंती करता हूँ। **श्री गणेशाय नमः श्री साईनाथाय नमः। मम कार्य निर्विघ्न मस्तु।** ऐसा बोलकर हाथ का पानी (जल) पात्र मे छोड़े। गणेशजी को एक फूल और एक फूल साईबाबा को चढ़ाकर नमस्कार करे।

६) पात्र का जल तुलसी मे चढ़ा दे। इस प्रकार व्रत संकल्प करके पुस्तक मे बताये अनुसार व्रताचरण करे और साईबाबा की पूजन-अर्चन करे।

पंचोपचार पूजा :

पंचोपचार पूजन के लिए सर्वप्रथम श्रीसाईबाबा का **'त्रिगुणात्मक दत्तात्रेयस्वरूपिणे परमकारूणिकाय श्री साईनाथाय नमः'** यह मंत्र का उच्चारण करे। मंत्र पूर्ण बोले।

१) **त्रिगुणात्मक दत्तात्रेयस्वरूपिणे परमकारूणिकाय श्रीसाईनाथाय नमः। विलेपनार्थे चंदन समर्पयामि।** (श्रीसाईबाबा के चरणों व मस्तक पर चंदन, अष्टगंध या कुमकुम का तिलक लगाये।)
२) **त्रिगुणात्मक दत्तात्रेयस्वरूपिणे परमकारूणिकाय श्री साईनाथाय नमः। पूजार्थे पुष्प समर्पयामि।** (श्री साईबाबा को गुलाब का फूल या अन्य खुशबू वाला (सुगंधित) फूल या माला चढ़ाये।)
३) **त्रिगुणात्मक दत्तात्रेयस्वरूपिणे परमकारूणिकाय श्री साईनाथाय नमः। सुवासार्थे परिमल द्रव्य धूपं च समर्पयामि।** (श्री साईबाबा के आगे इत्र लगी रुई रखे। इसके बाद अगरबत्ती या धूप जलाकर बाबा के आगे चारो तरफ घुमाये और दुसरे हाथ से घंटा या घंटी बजाये।)
४) **त्रिगुणात्मक दत्तात्रेयस्वरूपिणे परमकारूणिकाय श्री साईनाथाय नमः। दीपार्थे नीरांजनदीप समर्पयामि।** (दिपक मे घी और बाती लगाकर रखे। दिपक जलाकर दूसरे हाथ से घंटा बजाये)

५) **त्रिगुणात्मक दत्तात्रेयस्वरूपिणे परमकारूणिकाय श्री साईनाथाय नमः। नैवेद्यार्थे मिष्ठान्नं नैवेद्य समर्पयामि।** (चौकी पर साईबाबा के आगे कटोरी या पात्र मे नैवेद्य रखे। यह नैवेद्य **फल**, मिठाई, शक्कर या गुड कुछ भी रख सकते है। नैवेद्य के ऊपर से जल घुमाकर नमस्कार करे। यह नैवेद्य पूजा के बाद सबको प्रसाद की तरह बाट दे।) इसके बाद **त्रिगुणात्मक दत्तात्रयस्वरूपिणे परमकारूणिकाय श्रीसाईनाथाय नमः। यथाशक्ति द्रव्यात्मकां दक्षिणां समर्पयामि।** यह मंत्र बोलकर पान के दो पत्तो पर १ रुपये/२ रुपये या ५ रूपये (यथाशक्ती) रखकर उस पर एक चमच पानी छोड़े। इसके बाद श्रीसाईबाबा से प्रार्थना करे।

प्रार्थना - "हे सद्गुरू साईनाथ। मेरी इष्ट कामना पूर्ण हेतु मैने आपकी पंचोपचार पूजा करके पवित्र नैवेद्य अर्पण किया है। इस लिए पूजा और नैवेद्य स्वीकार करना और मुझ पर प्रसन्न होकर मेरी इष्टकामना पूर्ती का आशीर्वाद देना। अल्पमती या जानकारी नही होने के कारण कोई कमी रह गयी हो तो इसके लिए मुझे क्षमा करना यही प्रार्थना है।"

प्रार्थना के बाद श्रीसाईबाबा की आरती करे। इसके बाद श्रीसाई माहात्म्य अर्थात 'नौ गुरूवार की व्रत - कथा, श्रीसाई चालीसा, श्री साईबाबा अष्टोत्तरशत नामावली, साईबाबा के ग्यारह वचन, भजन आदि बोले। श्रीसाईबाबा को दिखाया हुआ नैवेद्य प्रसाद की तरह सबको बाट दे।

पूजा विसर्जन : दुसरे दिन सुबह स्नान करके श्रीसाईबाबा की तस्वीर को गंध, फूल व अक्षत लगाकर नमस्कार करे। सब वस्तु ठिक से उठाकर स्वच्छ करके उसकी जगह पर रख दे। गणपति मानकर पूजा की सुपारी घर के मंदीर मे रखे और वही सुपारी आगे के गुरूवार को पूजा मे रखे। व्रत का उद्यापन के बाद दक्षिणा के साथ ब्राह्मण को दान दे दे। बाबा को दक्षिणा मे रखे पैसे श्रद्धापूर्वक बिना भुले एक जगह रखे। उद्यापन के बाद सब दक्षिणा साईबाबा के मंदीर की दान पेटी मे डाल दे या ब्राह्मण को दान दे दे। पूजा के फूल या अन्य वस्तु (निर्माल्य) समयानुसार विसर्जित कर दें।

व्रतोद्यापन (उद्यापन) :

१) व्रत का उद्यापन नौ गुरूवार व्रताचरण करने के बाद दसवे गुरूवार को करे।
२) इस दिन हमेशा की तरह पंचोपचार पूजा करे।
३) इस दिन हमेशा की तरह स्वयंपाक करे। एक्काद मिठा मिष्ठान या पकवान रखे। श्रीसाईबाबा को महानैवेद्य दिखाये। भोजन के समय श्रीसाईबाबा को दिखाया महानैवेद्य व्रतकर्ता ग्रहण करे।
४) उद्यापन मे एक छोटे या किशोरावस्था के बच्चे को भोजन के लिए बुलाये। उसे भोजन, दक्षिणा व संभव हो तो एक वस्त्र दे। पाँच गरीबों को भोजन (अथवा शिधा), दक्षिणा व संभव हो तो एक-एक वस्त्र दे।
५) समाज मे इस व्रत का और साईभक्ति का प्रचार-प्रसार बढ़े इस हेतु व्रतकथा की यथाशक्ति ५, ७, ११, २१ या ५१ पुस्तके अपने मित्र, रिश्तेदारो, पडोसी जानने वालो को बाटनी चाहिए। दसवे गुरूवार को साईबाबा की पूजा करके समय पुस्तक को भी हल्दी, कुमकुम व पुष्प अर्पण करे और पूजा करने बाद पुस्तक भेट दे।
६) शाम के समय श्रीसाईबाबा की तस्वीर के आगे अगरबत्ती करे और घी का दिपक जलाकर प्रार्थना करे - 'हे सद्गुरु साईनाथ! आज आपकी परमकृपा से नौ गुरूवार का व्रत उद्यापन सहीत पूर्ण हो गया है। यह व्रत-पूजा और उद्यापन स्वीकार करके मेरी इष्ट मनोकामना पूर्ण करना। यह व्रताचरण मे कोई कमी या भूल-चुक रह गयी हो तो आप कृपा करके मुझे क्षमा करना और आपकी कृपा दृष्टी रखना।' इसके बाद श्रीसाईबाबा को आदर से नमस्कार करना।
७) **विशेष सूचना** : नौ गुरूवार व्रताचरण पूर्ण होने के बाद दसवे गुरूवार को उद्यापन मे कोई अडचन आ रही हो तो साईबाबा को उद्यापन का संकल्प करने के लिए कहे और जितना जल्दी हो सके आने वाले आगे के गुरूवार को उद्यापन कर दे।

श्रीसाईनाथ माहात्म्य अर्थात नौ गुरूवार का शिरडी के साईबाबा की व्रत कथा

श्रीसाईनाथ शिरडीं मे प्रकट : महाराष्ट्र के तीर्थक्षेत्र 'शिरडी' यह श्रीसाईबाबा के नाम से जाना जाता है। श्रीसाईबाबा का यह शिरडी क्षेत्र अहमदनगर जिले के कोपरगांव तालुका मे आता है।

श्रीसाईबाबा सोलह वर्ष की आयु मे शिरडीं के एक नीमवृक्ष के नीचे प्रथम प्रकट हुए थे। उनके जन्मगांव, माता-पिता, कुल, गोत्र और पूर्व आयु के बारे मे कुछ भी पता नही था। वह किशोर लड़का पूरी रात नीमवृक्ष के नीचे बैठा रहा। उस समय उनके मुख का प्रकाश का तेज देखने लायक था और ऐसा लगे कि उन्हे लगातार देखते रहे। तप्ति गर्मी, मुसलाधार बरसात और कड़कती सर्दी मे वह किशोर बालक वही बैठा रहता था। कोई कुछ देता तो वह खा लेता था। उसके पास शरीर ढ़कने के लिए एक कफ़नी, बिछाने के लिए एक बारदान (कंतान) का टुकडा, एक इट और दंडा (सोंटा) था। वह इन सब चीजो को गुरू की प्रसादी कहता था। वह किशोर न किसी से बातचीत करता और न किसी से कुछ कहता। यह लड़का कौन है? यह जानने की गांव वालो को बड़ी उत्सकता थी।

एक दिन एक व्यक्ती के शरीर मे खंडोबा देव ने प्रवेश किया तो लोगो ने उनसे उस किशोर लड़के के बारे मे पूछा। तब खंडोबा देव गांव वालो को नीमवृक्ष के पास ले गये और वह जगह खोदने के लिए कहा। खुदाई करने पर उसमे एक पत्थर दिखलाई दिया। पत्थर उठाने पर उसके नीचे सिढ़ीयाँ दिखलायी दी। लोग सिढ़ीयो से अंदर उतरे तो अंदर देखा कि गौमुखी आकार की गुफा मे एक चौकी, जपमाला और चार दीपक जल रहे थे। यह देखकर सबको आश्चर्य हुआ। तब खंडोबा देव ने कहा कि 'यह किशोर लड़के ने यहाँ बारह वर्ष तक तपश्या की है।' लोगो ने बाहर निकलकर किशोर से उस स्थान के बारे मे पूछने पर उसने कहा, 'यह मेरे गुरू का स्थान है। इसे यथा स्थिति रहने दो।' तब लोगो ने सब चीजें

यथा स्थान पूर्वत रख दी और गुफा के बाहर निकल आये। इस बात के कुछ दिनो के बाद वह किशोर लड़का वहाँ दिखायी नही दिया। भक्तजनो! यही किशोर लड़का आगे चलकर 'श्री साईबाबा' के नाम से प्रख्यात हुआ।

चांद पाटील की घोडी मिली : औरंगाबाद जिल्हे के धूप नामक गांव मे चांद पाटील नाम का एक मुस्लिम परिवार रहता था। उसकी घोडी खो गयी थी। दो महीने तक ढूंढ़ने के बाद भी वह नही मिली मिलने से वह हताश हो गया था। एक दिन चांद पाटील कही बाहर से गाँव आ रहा था तो रास्ते मे एक पेड़ के नीचे एक फकीर बैठा हुआ दिखा। यह श्री साईबाबा का दूसरी बार प्रकट होना था।

वह फकीर बाबा चिलम फूंकने की तैयारी कर रहा था। फकीर बाबा ने चांद पाटील को रोककर बुलाया और चिलम के दो दम मारकर आगे जाने के लिए कहा। उस समय फकीर से बातचीत करते हुए चांद पाटील ने अपनी घोडी खो जाने की बात कही। तब फकीर ने उंगली एक जगह दिखाकर वहा घोडी मिलेगी ऐसा कहा। चांद पाटील को विश्वास नही था फिर भी वह उस जगह पर गया। मगर आश्चर्य! वहाँ उसे उसकी घोडी चारा खाते हुए मिली। उसकी खुशी का ठिकाना नही रहा और वह घोडी लेकर फकीर के पास आया। लेकिन यह फकीर कोई साधारण व सामान्य मनुष्य नही है इस बात का उसे विश्वास हो गया। चिलम तैयार थी मगर अंगार कहा से लाये? तब फकीर ने जमीन मे चिमटा घुसेड कर अंगारा निकाला और चिलम पर रखा। फिर दंडा (सोटा) जमीन पर ठोका तो जमीन मे से जलधारा बहने लग गयी। उसने साफी को भिगोया और निचोड कर चिलम पर लगाया। फिर फकीर ने चिलम के दम मारे और चिलम चांद पाटील को दी। चांद पाटील को आश्चर्य हुआ और उसने भी दो दम मारे। चांद पाटील को लगा कि यह फकीर कोई बडा चमत्कारी संत है और वह विनंती करके फकीर को अपने घर ले गया।

पुनश्चर शिरडी....! : इस प्रकार फकीर ने चांद पाटील के घर अपना मुक्काम किया। कुछ दिन के बाद पाटील के घर मे विवाह अवसर आया। लड़की शिरडी की थी इसलिए बारात के साथ फकीर बाबा भी शिरडी आये। शिरडी पहुचने पर खंडोबा के मंदीर के सामने म्हालसापती पुजारी के आँगन मे बाराती उतरे। एक बैलगाडी से बाबा भी उतरे। बारातीयों के साथ आये उस फकीर बाबा को देखते ही म्हलसापती खींचे चले आये और उनका स्वागत करते हुए बोले, "आओ साई"। फकीर बाबा ने आगे वही नाम अपनाया और लोग उन्हे 'साईबाबा' के नाम से जानने लगे। शादी के बाद बारात वापस धूपगांव चली गयी मगर बाबा चांद पाटील की विनंती पर भी वापस नही गये और शिरडी मे ही एक टूटी मस्जिद मे अपना मुक्काम बना लिया।

द्वारकामाई : आगे जाकर यह मस्जिद ही बाबा का कार्यक्षेत्र हो गयी। उनके चमत्कार सुनकर असंख्य भक्त यहाँ उनके दर्शन के लिए आने लगे। बाबा इस मस्जिद को बड़े आदर से 'द्वारकामाई' कह कर उल्लेख करते थे। यह द्वारकामाई (मस्जिद) दो हिस्सो मे एक टूटी-फूटी इमारत थी। बाबा यही रहते थे। बाबा बोरीयो पर सो जाते थे और यही बैठक लगाते थे। उनका बर्तन, सोटा, चिलम, तंबाकू ये सारी चीजें यही पड़ी होती थी। ठंड से बचने के लिए एक धूनी भी जलती रहती थी और आज भी वह धूनी मौजूद है। यहाँ बाबा ईश्वर भक्ति मे मस्त होकर भजन-किर्तन करते और मन होने पर पैरो मे घुंगरू बाँधकर नाचते भी थे। यह दृश्य बहुत ही सुंदर देखने लायक होता था।

ऐसे हुआ दीपोत्सव : बाबा को दिये जलाने का बहुत शौक था। वे द्वारकामाई मे असंख्य दिये जलाकर प्रकाशमय करते थे। इसके लिए उन्हे दुकानदारो से तेल माँगने जाना पड़ता था। एक बार सब दुकानदारो ने मिलकर कपट किया और किसी भी दुकानदार ने बाबा को तेल नही दिया। बाबा वहाँ से चुपचाप लौट आये। लेकिन बाबा को क्या तेल और क्या पानी? बाबा ने दियो मे पानी भरा और दिये

जल उठे। यह देखकर गांववाले और सभी दुकान अचंभित हो गये और बाबा ने अपने उद्‌भुत सामर्थ्य और चमत्कार का परिचय दिया। सभी दुकानदार बाबा की शरण मे जाकर अभय मांगने लगे। उस रात वे दिये अखंड जलते रहे।

बाबा सब दुःखो की दवा : शिरडी मे बाबा का एक भक्त गनपत दर्जी था। एक बार उसे ठंडा बुखार हुआ। उसने बहुत इलाज कराये मगर थोडा आराम मिलने के बाद फिर से बुखार आ जाता था। काफी खर्चा करने के बाद आराम नही मिलने पर वह बाबा की शरण मे जाकर उनके चरण छूकर रोते हुए बोला, 'बाबा ! मैंने ऐसा कौन सा पाप कर्म किया है जो यह बुखार मुझे छोडता नही है? सब कोशिशे बेकार हो चुकी है, अब आप ही मेरा इलाज करे।'

बाबा मन मे करूणा लाकर बोले, 'बाला! हिम्मत नही हारना। तू लक्ष्मी माता के मंदीर के पास जाकर एक काले कुत्ते को दही-चावल खिला दे, फिर देख क्या नतीजा आता है।' दर्जी के मन मे यह सुनकर उम्मीद जागी और दही-चावल लेकर वह लक्ष्मी माता के मंदीर के पास गया। वहाँ एक काला कुत्ता मौजूद था। जैसा बाबा ने कहा उसने वैसा ही किया। फिर लौटकर बाबा को सब बता दिया। तब से कुछ ही दिनो मे उसकी बिमारी छुट गयी।

कोई भेद-भाव नही बाबा को : श्रीसाईबाबा के पास अनेक जाती-धर्म, परेशान व दुःखी लोग आते थे। उन्हे अपनी व्यथा, चिंता बताते थे। बाबा वह सभी चिंता जानकर उसका योग्य उपाय बताते थे। वे सबसे अपनत्व से मिलते थे और अपनी तरफ खिंच लेते थे। उनके पास किसी प्रकार का कोई भेद-भाव नही था। कोई भी बाबा के पास गया हो और बिना निवारण आया हो ऐसा कभी नही हुआ। एक बार दादासाहेब खापर्डे उन्हे मिलने आये। उनके लड़के को प्लेग की बिमारी थी। तब बाबा ने उसका दुःख अपने ऊपर लेकर उस लड़के को जीवनदान दिया।

जानते सबकी मनोभावना : साईबाबा कभी भी माथे पर तिलक या गंध नही लगवाते थे। एक बार उनके दर्शन को आये डॉ. पंडीत ने उनकी पूजा करके माथे पर तिलक लगा दिया। तब दादा भट्ट को ऐसा लगा कि बाबा को गुस्सा आ गया

है। लेकिन ऐसा कुछ घटित नही हुआ। शाम को दादा भट्ट ने बाबा को इसका कारण पूछा। तब बाबा बोले 'अरे गुरू ब्राह्मण है और मैं मुसलमान ! फिर भी मैं उनका गुरू हुँ यह समझकर उन्होने मेरी पूजा की। भक्ति के आगे फकीरी की कुछ नही चलती है।'

एक बार तर्खडकर की पत्नी ने एक कुत्ते को प्रेम से भाकरी (रोटी) खिलाई। शाम को वह बाबा के दर्शन के लिए गयी तब बाबा बोले, 'मा! मैं तृप्त हो गया।' बाबा का बोलना उसे कुछ समझ मे नही आया। उसने पुछा, 'बाबा! आप क्या बोल रहे है?' तब बाबा ने उत्तर दिया, 'तूने दोपहर को जिसे भाकरी (रोटी) खिलाई थी वह कुत्ता मैं ही था। जो मनुष्य सबमे मुझे देखता है, भुखो की भुख जानता है, वह मुझे अतिशय प्रिय है।'

वेदशास्त्रो में पारंगत मुले शास्त्री एक बार गोपाल बुट्टी के साथ बाबा के दर्शनाथ गये थे। लेकिन शास्त्रीजी का ब्राह्मण होने के कारण उन्होने द्वारकामाई (मस्जिद) मे अंदर जाना उचित नही समझा और दूर से ही बाबा के दर्शन किये। तब बाबा ने उन्हे उनके गुरु घोलपनाथ जो समाधिस्थ हो गये थे के स्वरूप मे दर्शन कराये। तब शास्त्रीजी ने सब विद्वता भूलकर दौड़कर बाबा के चरण छुए और हाथ जोड़कर नम्रता से बाबा के आगे खड़े रहे। इस प्रकार बाबा ने उनके मन का समाधान करके उन्हे अपना शिष्य बना लिया। ऐसे ही एक डॉक्टर थे जो भगवान राम के अलावा किसी को नही मानते थे। उन्हे बाबा ने श्रीराम स्वरूप मे दर्शन कराये और दिखाया कि प्रभु रामचंद्र और मैं दोनो एक ही रूप है।

ठाणे के चोलकर ने बाबा से मन्नत मांगी कि अगर उसे अच्छी नौकरी मिल गयी तो वह शिरडी में आकर बाबा को मिसरी अर्पण करेगा। इसके बाद साईबाबा की कृपा से उसे अच्छी नौकरी लग गयी। लेकिन कुछ अडचन के कारण अपनी मन्नत पुरी करने के लिए वह शिरडी नही जा पा रहा था। इस कारण से उसने शक्कर खानी छोड दी। वह बिना शक्कर की कोरी चाय पीने लगा था। कुछ दिनो के बाद अपनी मन्नत पूरी करने के लिए शिरडी साईबाबा के दर्शन को आया तब बाबा

ने जोग साहब को चोलकर के लिए कहा कि, 'जोग, तुम इसे भरपूर शक्कर वाली चाय पिलाना।' तब चोलकर को बाबा के अंतर्ज्ञान की असली पहचान हुई।

बाबा की उदी का प्रभाव : जामनेर के तहसीलदार नानासाहब चाँदोरकर की लड़की को प्रसुती के समय अड़चन आयी थी। तब बाबा ने रामगीत गोसाई के द्वारा उदी भेजकर लड़की की प्रसुती सुखमय करायी। मुंबई में एक गुजराती परिवार मे खिमजी लालजी का लड़का भयंकर बिमारी से ग्रस्त था। तब वह लड़का भी बाबा की उदी से ठिक हुआ। ऐसे ही मुंबई मे एक पारसी परिवार था। उसकी लड़की को मिर्गी का दोरा पड़ता था। बहुत इलाज करने पर वह ठिक नही हो रही थी। पारसी के मित्र दिक्षित जो बाबा के भक्त थे उन्होने बाबा की उदी लड़की को पानी मे मिलाकर पिलायी तो कुछ ही दिनों मे लड़की को मिर्गी के दौर आने बंद हो गये। इस प्रकार बाबा की उदी के प्रभाव से लोगो को निवारण मिलता है।

श्रीसाईबाबा की ऐसी अनंत लीलाएँ है। उसमे से कितनी आपको बताये? साईबाबा कृपासिद्ध थे। करूणामूर्ती थे। बाबा का अवतार लोगो के परोपकार के लिए हुआ था। तिर्थक्षेत्र शिरडी मे अनेक वर्षो तक रहने बाद बाबा ने शके १८४० मे विजया दशमी के दिन सामधी ले ली। आज भी उनकी चिरंतन ज्योती भावार्थी भक्तो को उनकी कृपा की अनुभूती देती है।

श्रीसाईबाबा का यह परम पवित्र कथा जो मन से पढ़ता है और श्रद्धा से श्रवण करता है, उसके सभी दुःख-संकट खत्म हो जाते है और उसकी सर्व मनोकामना पूर्ण होती है।

।। इति श्रीसाईनाथ माहात्म्य अर्थात नौ गुरूवार का शिरडी के साईबाबा का व्रत-कथा संपूर्ण ।।

।। श्री साई शरणं स्तोत्र ।।

सर्व साधनहीनस्य, पराधीनस्य सर्वथा,
पापपीनस्य दीनस्य, श्री साई शरणं मम (१)
संसार-सुख-संप्राप्ति, सन्मुखस्य विशेषत:
बहिर्मुखस्य जीवस्य, श्री साई शरणं मम (२)
सदा विषयकामस्य, देहारामस्य सर्वथा,
दुष्ट स्वभाव वामस्य, श्री साई शरणं मम (३)
संसार सर्पदष्टस्य धर्मभ्रष्टस्य दुर्मते,
लौकिक प्राप्ति कष्टस्य, श्री साई शरणं मम (४)
विस्मृतं स्वीय धर्मस्य, कर्म मोहित चेतस:
स्वरूप ज्ञानशून्यस्य, श्री साई शरणं मम (५)
विषयाकांत देहस्य, वेमुखहत समंते,
इन्दियाश्च गृहीतस्य, श्री साई शरणं मम (६)
संसार-सिंधु-मग्नस्य, भग्न भावस्य दुष्कृते,
दुर्भाव भग्नचितस्य, श्री साई शरणं मम (७)
विवेक धैर्य भक्त्यादि रहितस्य निरन्तरम्
विरुद्ध करु ना सकते, श्री साई शरणं मम (८)
सर्व साधन शून्यस्य साधनं साई एवतु,
तस्मात् सर्वात्मना नित्यं, श्री साई शरणं मम (९)
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्व मम साईनाथ।।
कायेन वाचा मनसेंद्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वा प्रकृति स्वभावात्।
करोमि यद् यद् सकलं परस्मे, नारायणायेति समर्पयामि।।
हरि ॐ तत्सत्। श्रीसाई परमात्मने मम।।
अनंत कोटि, ब्रह्मांडनायक, महाराजाधिराज
महासमर्थ परब्रह्म, श्री सच्चिदानंदस्वरूप सद्गुरु
श्री साईनाथबाबा महाराज की जय

।। श्री साई चालीसा ।।

पहले साई के चरणों में, अपना शीश नवाऊँ मैं।
कैसे शिर्डी साई आए, सारा हाल सुनाऊँ मैं।।१।।
कौन हैं माता, पिता कौन हैं; यह न किसी ने भी जाना।
कहाँ जन्म साई ने धारा, प्रश्न पहेली रहा बना।।२।।
कोई कहे अयोध्या के ये रामचन्द्र भगवान हैं।
कोई कहता साईबाबा पवन-पुत्र हनुमान हैं।।३।।
कोई कहता मंगलमूर्ति श्री गजानन है साई।
कोई कहता गोकुल-मोहन देवकीनन्दन हैं साई।।४।।
शंकर समझ भक्त कई तो, बाबा को भजते रहते।
कोई कहे अवतार दत्त का, पूजा साई की करते।।५।।
कुछ भी मानो उनको तुम, पर साई है सच्चे भगवान।
बडे दयालु, दीनबंधु; कितनों को दिया जीवनदान।।६।।
कई वर्ष पहले की घटनां, तुम्हें सुनाऊँगा मैं बात।
चाँद पाटील के बेटे की, शिर्डी में आई थी बारात।।७।।
आया साथ उसी के था फकीर एक बहुत सुन्दर।
आया, आकर वहीं बस गया, पावन शिर्डी किया नगर।।८।।
कई दिनो तक रहा भटकता, भिक्षा माँगी उसने दर-दर।
और दिखाई ऐसी लीला, जग में जो हो गई अमर।।९।।
जैसे-जैसे उमर बढी, बढती ही वैसे गई शान।
घर-घर होने लगा नगर में, साईबाबा का गुण गान।।१०।।
दिग्-दिगन्त में लगा गूँजने, फिर तो साईजी का नाम।
दीन-दुखी की रक्षा करना, यही रहा बाबा का काम।।११।।
बाबा के चरणों में जाकर, जो कहता 'मैं हूँ निर्धन'।
दया उसी पर होती उनकी, खुल जाते दुःख के बन्धन।।१२।।

कभी किसी ने माँगी भिक्षा, 'दो बाबा मुझको सन्तान'।
'एवं अस्तु' तब कहकर साई, देते थे उसको वरदान ॥ १३ ॥
स्वयं दुःखी बाबा हो जाते, दीन-दुःखीजन का रख हाल।
अन्तःकरण श्री साई का, सागर जैसा रहा विशाल ॥ १४ ॥
भक्त एक मद्रासी आया, घर का बहुत बड़ा धनवान।
माल खज़ाना बेहद उसका, केवल नहीं रही सन्तान ॥ १५ ॥
लगा मनाने साईनाथ को, बाबा मुझ पर दया करो।
झंझा से झंकृत नैया को, तुमहीं मेरी पार करो ॥ १६ ॥
कुलदीपक के बिना अंधेरा, छाया हुआ है घर में मेरे।
इसीलिए आया हूँ बाबा, होकर शरणागत तोरे ॥ १७ ॥
कुलदीपक के इस अभाव में, व्यर्थ है दौलत की माया।
आज भिखारी बनकर बाबा, शरण तुम्हारी मैं आया ॥ १८ ॥
दे दो मुझको पुत्र-दान, मैं ऋणी रहूँगा जीवन भर।
और कोई आश न मुझको, सिर्फ भरोसा है तुम पर ॥ १९ ॥
अनुनय-विनय बहुत की उसने, चरणो में धर करके शीश।
तब प्रसन्न होकर बाबा ने, दिया भक्त को यह आशीष ॥ २० ॥
अल्ला भला करेगा तेरा, पुत्र जन्म हो तेरे घर।
कृपा रहेगी तुम पर उसकी, और तेरे उस बालक पर ॥ २१ ॥
अब तक नहीं किसी ने पाया, साई की कृपा का पार।
पुत्र-रत्न दे मद्रासी को, धन्य किया उसका संसार ॥ २२ ॥
तन-मन से जो भजे उसी का जग में होता है उद्धार।
साँच को आँच नहीं है कोई, सदा झूठ की होती हार ॥ २३ ॥
मैं हूँ सदा सहारा उसका, सदा रहूँगा उसका दास।
साई जैसा प्रभु मिला है, इतनी ही कम है क्या आस? ॥ २४ ॥
मेरा भी दिन था एक ऐसा, मिलती नहीं थी मुझे भी रोटी।
तन पर कपड़ा दूर रहा था, शेष रही नन्ही सी लंगोटी ॥ २५ ॥

सरिता सम्मुख होने पर भी, मैं प्यासा का प्यासा था।
दुर्दिन मेरा मेरे उपर, दावाग्नि बरसाता था ॥ २६ ॥
धरती के अतिरिक्त जगत में, मेरा कोई अवलम्बन न था।
बना भिखारी मैं दुनियाँ में, दर-दर ठोकर खाता था ॥ २७ ॥
ऐसे में इक मित्र मिला जो, परम भक्त साई का था।
जंजालो से मुक्त, मगर इस जगती में वह भी मुझ-सा था ॥ २८ ॥
बाबा के दर्शन के खातिर, मिल दोनों ने किया विचार।
साई जैसे दयामूर्ति के, दर्शन को हो गये तैयार ॥ २९ ॥
पावन शिर्डी नगरी में जाकर, देखी मतवाली मूरति।
धन्य जन्म हो गया कि हमने, जब देखी साई की सूरति ॥ ३० ॥
जबसे किए हैं दर्शन हमने, दुःख सारा कापूर हो गया।
संकट सारे मिटे और, विपदाओं का अन्त हो गया ॥ ३१ ॥
मान और सम्मान मिला, भिक्षा में हमको बाबा से।
प्रतिबिम्बित हो उठे जगत में, हम साई की आभा से ॥ ३२ ॥
बाबा ने सम्मान दिया है, मान दिया इस जीवन में।
इसका ही सम्बल ले मैं, हंसता जाऊँगा जीवन में ॥ ३३ ॥
साई की लीला का मेरे, मन पर ऐसा असर हुआ।
लगता, जगती के कण-कणमें; जैसे हो वह भरा हुआ ॥ ३४ ॥
'काशीराम' बाबा का भक्त, इस शिर्डी में रहता था।
'मैं साई का, साई मेरा;' वह दुनियाँ से कहता था ॥ ३५ ॥
सीकर स्वयं वस्त्र बेचता, ग्राम, नगर, बाजारों में।
झन्कृति उसकी हृदय तन्त्री थी, साई की झन्कारों से ॥ ३६ ॥
स्तब्ध निशा थी, थे सोये, रजनी आंचल में चाँद सितारे।
नहीं सूझता रहा हाथ का हाथ अँधेरे के मारे ॥ ३७ ॥
वस्त्र बेचकर लौट रहा था, हाय! हाट से 'काशी'।
विचित्र बड़ा संयोग कि उस दिन, आता था वह एकाकी ॥ ३८ ॥

घेर राह में खड़े हो गये, उसे कुटिल, अन्यायी।
मारो, काटो, लूटो इसकी, ही ध्वनि पड़ी सुनाई ॥ ३९ ॥
लूट-पीट कर उसे वहाँ से, कुटिल गये चम्पत हो।
आघातों से मर्माहत हो, उसने दी थी संज्ञा खो ॥ ४० ॥
बहुत देर तक पड़ा रहा वह, वहीं उसी हालत में।
जाने कब कुछ होश हो उठा, उसको किसी पलक में ॥ ४१ ॥
अनजाने ही उसके मुँह से, निकल पड़ा था साई।
जिसकी प्रतिध्वनि शिर्डी में, बाबा को पड़ी सुनाई ॥ ४२ ॥
क्षुब्ध उठा हो मानस उनका, बाबा गये विकल हो।
लगता जैसे घटना सारी, घटी उन्हीं के सम्मुख हो ॥ ४३ ॥
उन्मादी से इधर उधर तब, बाबा लगे भटकने।
सम्मुख चीजें जो भी आई, उनको लगे पटकने ॥ ४४ ॥
और धधकते अंगारे में, बाबा ने कर डाला।
हुए सशंकित सभी वहाँ; देख ताण्डवनृत्य निराला ॥ ४५ ॥
समझ गए सब लोग कि कोई, भक्त पड़ा संकट में।
क्षुभित खड़े थे सभी वहाँ पर, पड़े हुए विस्मय में ॥ ४६ ॥
उसे बचाने के ही खातिर, बाबा आज विकल है।
उसकी ही पीड़ा से पीड़ित, उनका अन्तस्तल है ॥ ४७ ॥
इतने में ही विधि ने अपनी, विचित्रता दिखलाई।
देखकर जिसको जनता की, श्रद्धा-सरिता लहराई ॥ ४८ ॥
लेकर संज्ञाहीन भक्त को, गाडी एक वहाँ आई।
सम्मुख अपने देख भक्त को, साई की आँखें भर आई ॥ ४९ ॥
शान्त, धीर, गम्भीर, सिन्धु-सा, बाबा का अंतःस्तल।
आज न जाने क्यों रह-रह कर, हो जाता था चंचल ॥ ५० ॥
आज दया की मूर्ति स्वयं था, बना हुआ उपचारी।
और भक्त के लिए आज था, देव बना प्रतिहारी ॥ ५१ ॥

आज भक्ति की विषम परीक्षा में, सफल हुआ था काशी।
उसके ही दर्शन के खातिर, थे उमड़े नगर-निवासी ॥ ५२ ॥
जब भी और जहाँ भी कोई, भक्त पड़े संकट में।
उसकी रक्षा करने बाबा, जाते हैं पलभर में ॥ ५३ ॥
युग-युग का है सत्य यह, नहीं कोई नयी कहानी।
आपतग्रस्त भक्त जब होता, जाते खुद अन्तर्यामी ॥ ५४ ॥
भेद-भाव से परे, पुजारी मानवता के थे साई।
जितने प्यारे हिन्दु-मुस्लिम, उतने ही थे सिक्ख-ईसाई ॥ ५५ ॥
भेद-भाव मन्दिर-मस्जिद का तोड-फोड़ बाबा ने डाला।
राम-रहीम सभी उनके थे, कृष्ण-करीम अल्लाताला ॥ ५६ ॥
घण्टी की प्रतिध्वनि से गूँजा, मस्जिद का कोना कोना।
मिले परस्पर हिन्दु-मुस्लिम, प्यार बढ़ा दिन-दिन दूना ॥ ५७ ॥
चमत्कार था कितना सुंदर, परिचय इस काया ने दी।
और नीम की कड़वाहट में भी, मिठास बाबा ने भर दी ॥ ५८ ॥
सबको स्नेह दिया साई ने, सबको सन्तुल प्यार किया।
जो कुछ जिसने भी चाहा, बाबा ने उसको वही दिया ॥ ५९ ॥
ऐसे स्नेहशील भाजन का, नाम सदा जो जपा करे।
पर्वत जैसा दुःख न क्यों हो, पलभर में वह दूर टरे ॥ ६० ॥
साई जैसा दाता हमने, अरे नहीं देखा कोई।
जिसके केवल दर्शन से ही, सारी विपदा दूर गई ॥ ६१ ॥
तन में साई, मन में साई, साई-साई भजा करो।
अपने तन की सुधि खोकर, सुधि उसकी तुम किया करो ॥ ६२ ॥
जब तू अपनी सुधियाँ तजकर, बाबा की सुधि किया करेगा।
और रात-दिन 'बाबा, बाबा, बाबा' ही तू रटा करेगा ॥ ६३ ॥
तो बाबा को अरे! विवश हो, सुधि तेरी लेनी ही होगी।
तेरी हर इच्छा बाबा को, पूरी ही करनी होगी ॥ ६४ ॥

जंगल-जंगल भटक न पागल, और ढूंढने बाबा को।
एक जगह केवल शिर्डी में, तू पायेगा बाबा को।। ६५ ।।
धन्य जगत में प्राणी है वह, जिसने बाबा को पाया।
दुःख में सुख में प्रहर आठ हो, साई का ही गुण गाया।। ६६ ।।
गिरे संकटों के पर्वत, चाहे बिजली ही टूट पड़े।
साई का ले नाम सदा तुम, सन्मुख सबके रहो अड़े।। ६७ ।।
इस बूढ़े की सुन करामत, तुम हो जावोगे हैरान।
दंग रह गए सुन कर जिसको, जाने कितने चतुर सुजान।। ६८ ।।
एक बार शिर्डी में साधु, ढोंगी था कोई आया।
भोली-भाली नगर-निवासी, जनता को था भरमाया।। ६९ ।।
जड़ी-बूटियाँ उन्हे दिखा कर, करने लगा वहाँ भाषण।
कहने लगा सुनो श्रोतागण, घर मेरा है वृन्दावन।। ७० ।।
औषधि मेरे पास एक है, और अजब इसमें शक्ति।
इसके सेवन करने से ही, हो जाती दुःख से मुक्ति।। ७१ ।।
अगर मुक्त होना चाहो तुम, संकट से, बीमारी से।
तो है मेरा नम्र निवेदन, हर नर से, हर नारी से।। ७२ ।।
लो खरीद तुम इसको, इसकी सेवन-विधियाँ हैं न्यारी।
यद्यपि तुच्छ वस्तु है यह, गुण उसके हैं अतिशय भारी।। ७३ ।।
जो है संततिहीन यहाँ यदि, मेरी औषधि को खायें।
पुत्र-रत्न हो प्राप्त, अरे और वह मुँह माँगा फल पायें।। ७४ ।।
औषध मेरी जो न खरीदे, जीवन भर पछतायेगा।
मुझ जैसा प्राणी शायद ही, अरे यहाँ आ पायेगा।। ७५ ।।
दुनियाँ दो दिन का मेला है, मौज-शौक तुम भी करलो।
गर इससे मिलता है सब कुछ, तुम भी इसको ले लो।। ७६ ।।
हैरानी बढती जनता की; देख इसकी कारस्तानी।
प्रमुदित वह भी मन ही मन था, देख लोगों की नादानी।। ७७ ।।

खबर सुनाने बाबा को यह, गया दौड़कर सेवक एक।
सुनकर भृकुटी तनी और, विस्मरण हो गया सभी विवेक।। ७८ ।।
हुक्म दिया सेवक को, सत्वर पकड़ दुष्ट को लावो।
या शिर्डी की सीमा से, कपटी को दूर भगावो।। ७९ ।।
मेरे रहते भोली-भाली, शिर्डी की जनता को।
कौन नीच ऐसा जो, साहस करता है छलने को।। ८० ।।
पलभर में ही ऐसे ढोंगी, कपटी नीच लुटेरे को।
महानाश के महागर्त में, पहुँचा दूँ जीवन भर को।। ८१ ।।
तनिक मिला आभास मदारी, क्रूर, कुटिल, अन्यायी को।
काल नाचता है अब सिर पर, गुस्सा आया साई को।। ८२ ।।
पलभर में सब खेल बन्द कर, भागा सिर पर रखकर पैर।
सोच रहा था मन ही मन, भगवान! नहीं है क्या अब खैर।। ८३ ।।
सच है साई जैसा दानी, मिल न सकेगा जग में।
अंश ईशका साईबाबा, उन्हें न कुछ भी मुश्किल जग में।। ८४ ।।
स्नेह, शील, सौजन्य आदि का, आभूषण धारण कर।
बढता इस दुनियाँ में जो भी, मानव-सेवा के पथ पर।। ८५ ।।
वही जीत लेता है जगती के, जन जन का अंतःस्तल।
उसकी एक उदासी ही, जग को कर देती है विह्वल।। ८६ ।।
जब-जब जग में भार पाप का, बढ़ बढ़ हो जाता है।
उसे मिटाने के ही खातिर, अवतारी हो आता है।। ८७ ।।
पाप और अन्याय सभी कुछ, इस जगती का हर के।
दूर भगा देता दुनिया के दानव को क्षण भर में।। ८८ ।।
स्नेह-सुधा की धार बरसने, लगती है दुनिया में।
गले परस्पर मिलने लगते, जन-जन है आपस में।। ८९ ।।
एसे ही अवतारी साई, मृत्युलोक में आ कर।
समता का यह पाठ पढ़ाया, सबको अपना आप मिटाकर।। ९० ।।

नाम 'द्वारका' मस्जीद का, रखखा शिर्डी में साई ने।
दाप, ताप, सन्तान मिटाया, जो कुछ आया साई ने।। ९१ ।।
सदा याद में मस्त राम की, बैठे रहते थे साई।
प्रहर आठ ही राम नाम का, भजते रहते थे साई।। ९२ ।।
सूखी-रूखी ताजी-बासी, चाहे या होवे पकवान।
सदा प्यार के भूखे साई के, खातिर थे सभी समान।। ९३ ।।
स्नेह और श्रद्धा से अपनी, जन जो कुछ दे जाते थे।
बडे चाव से उस भोजन को, बाबा पावन करते थे।। ९४ ।।
कभी-कभी मन बहलाने को, बाबा बाग में जाते थे।
प्रमुदित मन में निरख प्रकृति, छटा को वे होते थे।। ९५ ।।
रंग-बिरंगी पुष्प बाग के, मन्द-मन्द हिल-डुल करके।
बीहड वीराने मन में भी, स्नेह सलिल भर जाते थे।। ९६ ।।
ऐसी सुमधुर बेला में भी, दुःख, आपत, विपदा के मारे।
अपने मन की व्यथा सुनाने, जन रहते बाबा को घेरे।। ९७ ।।
सुनकर जिनकी करूण कथा को, नयन-कमल भर आते थे।
दे विभूति हर व्यथा, शान्ति, उनके उरमें भर देते थे।। ९८ ।।
जाने क्या अद्‌भुत शक्ति; उस विभूति में होती थी।
जो धारण करते मस्तक पर, दुःख सारा हर लेती थी।। ९९ ।।
धन्य मनुज वे साक्षात दर्शन, जो बाबा साई के पाये।
धन्य कमल कर उनके जिनसे, चरण-कमल वे परसाये।।१००।।
काश निर्भय तुमको भी, साक्षात साई मिल जाता।
वर्षों से उजड़ा चमन अपना, फिर से आज खिल जाता।।१०१।।
गर पकडता मैं चरण श्री के, नहीं छोडता उम्र भर।
मना लेता मैं जरूर उनको, गर रूठते साई मुझ पर।।१०२।।

***

।। श्री साईबाबा के ग्यारह वचन ।।

जो शिरडी में आएगा, आपद् दूर भगाएगा।।१।।
चढ़े समाधि की सीढ़ी पर, पैर तले दुःख की पीढ़ी पर।।२।।
त्याग शरीर चला जाऊंगा, भक्त-हेतु दौड़ा आऊंगा।।३।।
मन में रखना दृढ विश्वास, करे समाधी पूरी आस।।४।।
मुझे सदा जीवित ही जानो, अनुभव करो सत्य पहचानो।।५।।
मेरी शरण आ खाली जाये, होत तो कोई मुझे बताये।।६।।
जैसा भाव रहा जिस जन का, वैसा रूप हुआ मेरे मन का।।७।।
भार तुम्हारा मुझ पर होगा, वचन न मेरा झूठ होगा।।८।।
आ सहायता लो भरपूर, जो मांगा वह नहीं है दूर।।९।।
मुझ में लीन वचन मन काया, उसका ऋण न कभी चुकाया।।१०।।
धन्य धन्य वह भक्त अनन्य, मेरी शरण तज जिसे न अन्य।।११।।

श्री साईबाबा - अष्टोत्तरशत नामावली

ॐ श्री साईनाथाय नमः।
ॐ लक्ष्मीनारायणाय नमः।
ॐ कृष्णरामशिवमारुत्यादिरूपाय नमः।
ॐ शेषशायिने नमः।
ॐ गोदावरीतट शीलधीवासिने नमः।
ॐ भक्तहृदालयाय नमः।
ॐ सर्वहृन्निलयाय नमः।
ॐ भूतवासाय नमः।
ॐ भूतभविष्यद्भाववर्जिताय नमः।
ॐ कालातीताय नमः।
ॐ आरोग्यक्षेमदाय नमः।
ॐ धनमानप्रदाय नमः।
ॐ ऋद्धिसिद्धिदाय नमः।
ॐ पुत्रमित्रकलत्रबंधुदाय नमः।
ॐ योगक्षेमवहाय नमः।
ॐ आपद्बांधवाय नमः।
ॐ मार्गबंधवे नमः।
ॐ भुक्तिमुक्तिस्वर्गापवर्गदाय नमः।
ॐ प्रियाय नमः।
ॐ प्रीतिवर्धनाय नमः।
ॐ अन्तर्यामिणे नमः।
ॐ सच्चिदात्मने नमः।
ॐ शरणागतवत्सलाय नमः।
ॐ भक्तिशक्तिप्रदाय नमः।

ॐ ज्ञानवैराग्यदाय नम: ।
ॐ प्रेमप्रदाय नम: ।
ॐ संशयहृदयदौर्बल्यपापकर्मवासनाक्षयकराय नम: ।
ॐ हृदयग्रन्थिभेदकाय नम: ।
ॐ कर्मध्वंसिने नम: ।
ॐ शुद्धसत्त्वस्थिताय नम: ।
ॐ गुणातीतगुणात्मने नम: ।
ॐ अनन्तकल्याणगुणाय नम: ।
ॐ अमितपराक्रमाय नम: ।
ॐ कालाय नम: ।
ॐ कालकालाय नम: ।
ॐ कालदर्पदमनाय नम: ।
ॐ मृत्युंजयाय नम: ।
ॐ अमर्त्याय नम: ।
ॐ मर्त्याभयप्रदाय नम: ।
ॐ जीवाधाराय नम: ।
ॐ सर्वधाराय नम: ।
ॐ भक्तावनसमर्थाय नम: ।
ॐ भक्तावनप्रतिज्ञाय नम: ।
ॐ अन्नवस्त्रदाय नम: ।
ॐ नित्यानंदाय नम: ।
ॐ परमसुखदाय नम: ।
ॐ परमेश्वराय नम: ।
ॐ परब्रह्मणे नम: ।
ॐ परमात्मने नम: ।
ॐ ज्ञानस्वरूपिणे नम: ।
ॐ जगत: पित्रे नम: ।
ॐ भक्तानां मातृधातृपितामहाय नम: ।
ॐ भक्ताभयप्रदाय नम: ।
ॐ भक्तपराधीनाय नम: ।
ॐ भक्तानुग्रहकातराय नम: ।
ॐ जयिने नम: ।
ॐ दुर्धर्षाक्षोभ्याय नम: ।
ॐ पराजिताय नम: ।
ॐ त्रिलोकेषु अविघातगतये नम: ।
ॐ अशक्यरहिताय नम: ।
ॐ सर्वशक्तिमूर्तये नम: ।
ॐ सुरूपसुंदराय नम: ।
ॐ सुलोचनाय नम: ।
ॐ बहुरूपविश्वमूर्तये नम: ।
ॐ अरूपाव्यक्ताय नम: ।
ॐ अचिन्त्याय नम: ।
ॐ सूक्ष्माय नम: ।
ॐ सर्वान्तर्यामिने नम: ।
ॐ मनोवागतीताय नम: ।
ॐ प्रेममूर्तये नम: ।
ॐ सुलभदुर्लभाय नम: ।
ॐ असहायसहायाय नम: ।
ॐ अनाथनाथ -दीनबंधवे नम: ।
ॐ सर्वभारतभृतये नम: ।
ॐ अकर्मणे कुकर्मसुकर्मिणे नम: ।
ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय नम: ।

ॐ तीर्थाय नम: ।
ॐ वासुदेवाय नम: ।
ॐ सतां गतये नम: ।
ॐ सत्पुरुषाय नम: ।
ॐ पुरुषोत्तमाय नम: ।
ॐ सत्यतत्त्वबोधकाय नम: ।
ॐ कामादिषड्वैरिध्वंसिने नम: ।
ॐ समसर्वमतसंमताय नम: ।
ॐ दक्षिणामूर्तये नम: ।
ॐ श्री व्यंकटेशरमणाय नम: ।
ॐ अद्‌भुतानंदाचर्याय नम: ।
ॐ प्रपन्नार्तिहराय नम: ।
ॐ सत्परायणाय नम: ।
ॐ लोकनाथाय नम: ।
ॐ पावनानघाय नम: ।
ॐ अमृतांशवे नम: ।
ॐ भास्करप्रभाय नम: ।
ॐ ब्रह्मचर्यतपश्चर्यादिसुव्रताय नम: ।
ॐ सत्यधर्मपरायणाय नम: ।
ॐ सिद्धेश्वराय नम: ।
ॐ सिद्धसंकल्पाय नम: ।
ॐ योगेश्वराय नम: ।
ॐ भगवते नम: ।
ॐ भक्तवत्सलाय नम: ।
ॐ संसारसर्वदु:खक्षयकराय नम: ।
ॐ सर्ववित्सर्वतोमुखाय नम: ।
ॐ सर्वान्तर्बहि:स्थिताय नम: ।
ॐ सर्वमंगलकराय नम: ।
ॐ सर्वाभीष्टप्रदाय नम: ।
ॐ समरससन्मार्गस्थापनाय नम: ।
ॐ समर्थसद्‌गुरु साईनाथाय नम: ।
ॐ सकलइष्टप्रदाय नम: ।

।। साईबाबा का भोग ।।

भोग लगाओ साईबाबा रे मेरा प्रेम भरा थाल
प्रीति के पकवान बनाए और भाव भरे भोजन मैंने अपने हाथों से
कहो तो मंगाऊं ताजा मेवा बरफी पेडा पकवान रे मेरा प्रेम भरा थाल
गंगा जमुना के नीर लाऊं प्रेम से पान कराऊं
भोग लगाओ साईबाबा रे मेरा प्रेम भरा थाल
शबरी सुदामा और विदुर की भाजी
ऐसी तृप्ति कर लेना मेरे साईबाबा भोग लगाओ
साईबाबा मेरा प्रेम भरा थाल। लौंग सुपारी भरे पान के बीडे
मुखवास करो मेरे साईबाबा रे मेरा प्रेम भरा थाल
भक्तों के साई प्यारे तेरी है जय-जयकार मेरा प्रेम भरा थाल

।। श्री साईबाबा का पद ।।

- पद -

साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ।।धृ० ।।
जाना तुमने जगत्पसारा, सबही झूठा जमाना ।।साई० ।।१ ।।
मैं अंधा हूं बंदा आपका, मुझको प्रभु दिखलाना ।।साई० ।।२ ।।
दास गणू कहे अब क्या बोलूं, थक गई मेरी रसना ।।साई० ।।३ ।।

- पद -

रहम नजर करो अब मोरे साई ।। तुम बिन नहीं मुझे माँ-बाप-भाई ।।धृ० ।।
मैं अंधा हूं बंदा तुम्हारा ।। मैं ना जानूं अल्लाइलाही ।।१ ।।
खाली जमाना मैं ने गमाया । साथी आखर का किया न कोई ।।२ ।।
अपने मशिदका झाडू गणू है ।। मालिक हमारे, तुम बाबा साई ।।३ ।।

आरती साईबाबा की

(चाल : आरती श्रीरामायणजी की)

आरती श्रीसाई गुरुवर की । परमानन्द सदा सुरवर की ।धृ० । जा की कृपा विपुल सुखकारी । दु:ख, शोक, संकट, भयहारी ।। १ ।। शिरडी में अवतार रचाया । चमत्कार से तत्त्व दिखाया ।। २ ।। कितने भक्त चरण पर आये । वे सुखशांति चिरंतन पाये ।। ३ ।। भाव धरै जो मन में जैसा पाई पावत अनुभव वो ही वैसा ।।४।। गुरु की उदी लगावे तन को । समाधान लाभत उस मन को ।। ५ ।। साई नाम सदा जो गावे । सो फल जग में शाश्वत पावे ।। ६ ।। गुरुवासर करि पूजा-सेवा । उस पर कृपा करत गुरुदेवा ।। ७ ।। राम, कृष्ण, हनुमान रूप में । दे दर्शन, जानत जो मन में ।। ८ ।। विविध धर्म के सेवक आते । दर्शन इच्छित फल पाते ।। ९ ।। जै बोलो साईबाबा की । जै बोलो अवधूतगुरु की ।।१०।। 'साईदास' आरति को गावै । घर में बसि सुख, मंगल पावे ।।११।।

प्रकाशक : त्रिवेणी प्रकाशन, माधवबाग, सी.पी. टँक रोड, मुंबई ४०० ००४.
विक्रेता : गर्ग आणि कं. बुकसेलर्स, १०६ सी.पी. टँक रोड, मुंबई ४०० ००४.
मुद्रक : मिलींद आर्ट प्रिंटर्स, मुंबई. अक्षरजुळणी : साफल्य, ठाणे.